विश्व हिंदी दिवस समारोह-2026

विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 12 जनवरी 2026 को सुबह 11 बजे हिंदी प्रश्नोत्तरी का ऑनलाइन माध्यम से आयोजन किया गय। हिंदी प्रश्नोत्तरी में राजभाषा हिंदी, व्याकरण, संस्थान की गतिविधियों पर आधारित प्रश्न पूछे गये, जिसमें आईपीआर के 105 स्टाफ सदस्यों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इसी दिन अपराह्न सेमिनार हॉल में *"विकसित भारत (2047) तथा नेट शून्य उत्सर्जन (2070) की लक्ष्य प्राप्ति में नाभिकीय ऊर्जा का योगदान"* विषय पर एक विशिष्ट हिंदी व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री स्वप्नेश कुमार मल्होत्रा, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं पूर्व प्रमुख, जन जागरूकता प्रभाग (परमाणु ऊर्जा विभाग) मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम के प्रारंभ में संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के नवनियुक्त सह-अध्यक्ष डॉ. सूर्यकान्त गुप्ता ने श्री स्वप्नेश कुमार मल्होत्रा का स्वागत किया एवं उनका संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया।

श्री स्वप्नेश कुमार मल्होत्रा ने अपने व्याख्यान में भारत के दीर्घकालिक विकास लक्ष्यों, ऊर्जा आवश्यकताओं तथा जलवायु परिवर्तन की चुनौती के संदर्भ में नाभिकीय ऊर्जा की भूमिका को सरल, तथ्यात्मक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि वर्ष 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने तथा वर्ष 2070 तक नेट शून्य कार्बन उत्सर्जन का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए बड़े पैमाने पर स्वच्छ, भरोसेमंद और कम उत्पादन लागत वाले ऊर्जा स्रोतों की आवश्यकता होगी। इस संदर्भ में नाभिकीय ऊर्जा की उच्च ऊर्जा घनत्व, न्यूनतम भूमि आवश्यकता, कम कार्बन उत्सर्जन तथा निरंतर विद्युत आपूर्ति क्षमता पर विस्तार से प्रकाश डाला गया। उन्होंने मानव विकास सूचकांक (HDI) और प्रति व्यक्ति विद्युत खपत के आपसी संबंध को रेखांकित करते हुए स्पष्ट किया कि भारत की बढ़ती आर्थिक एवं सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए नाभिकीय ऊर्जा का योगदान अपरिहार्य है।

व्याख्यान में भारत के नाभिकीय ऊर्जा कार्यक्रम, वर्तमान एवं भावी नाभिकीय क्षमता, निजी क्षेत्र की संभावित भागीदारी, नियामक एवं कानूनी सुधारों, अपशिष्ट प्रबंधन, सुरक्षा मानकों तथा जनस्वीकृति जैसे महत्वपूर्ण पहलुओं पर भी चर्चा की गई। इसके अतिरिक्त, नाभिकीय संलयन के क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय एवं भारतीय उपलब्धियों, जैसे SST-1, ईटर एवं भावी DEMO रिएक्टर, का उल्लेख करते हुए भविष्य की संभावनाओं को रेखांकित किया गया। नाभिकीय ऊर्जा को लेकर आम जनता के मन में प्रचलित भ्रांतियों—सुरक्षा, लागत, विकिरण एवं अपशिष्ट का वैज्ञानिक तथ्यों और वैश्विक अध्ययनों के माध्यम से तार्किक समाधान प्रस्तुत किया गया।

यह व्याख्यान श्रोताओं के लिए अत्यंत ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायी सिद्ध हुआ, जिससे नाभिकीय ऊर्जा के प्रति वैज्ञानिक समझ एवं सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हुआ। कार्यक्रम ने विकसित भारत एवं जलवायु लक्ष्यों की प्राप्ति में नाभिकीय ऊर्जा की अनिवार्य भूमिका को स्पष्ट रूप से स्थापित किया।

श्री स्वप्नेश कुमार मल्होत्रा को पुष्प गुच्छ देते हुए डॉ. सूर्यकान्त गुप्ता

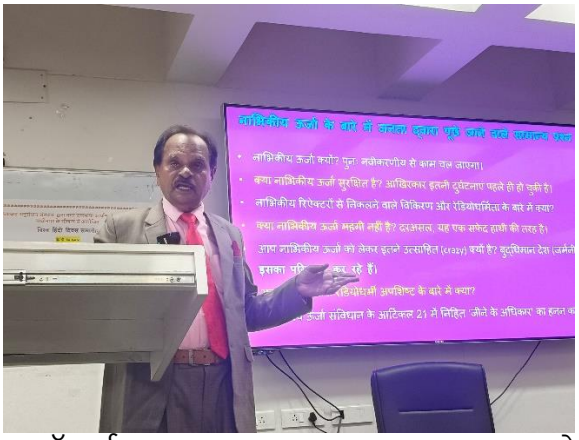

व्याख्यान देते हुए श्री स्वप्नेश कुमार मल्होत्रा

श्री स्वप्नेश कुमार मल्होत्रा जी को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए डॉ. राज सिंह

व्याख्यान के दौरान उपस्थित श्रोतागण